रिकार्ड–तू प्यार का सागर है.....ओमशांत प्रातःक्लास 10.1.1967

ओमशांति कहने से तुम बच्चों के अंदर भी आना चाहिए ओमशांति अर्थात् हम आत्मा शांत स्वरूप हैं।आत्मा अपना परिचय देती है।सभी आत्मायें एक परमपिता परमात्मा की संतान हैं।सभी आत्मायें गॉडफादर कह याद तो करती हैं ना।सिर्फ जो आत्मायें अथवा जीवात्मायें हैं वो अपने बाप को जानती नहीं हैं।तुम अब जान गये हो।बाप को बच्चों ने जाना है।बाप (से)तब बच्चों को बाप की पहचान मिले।बच्चे ने जन्म लिया और बाप को जान जाते हैं।आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है।नाम, रूप ,देश ,काल सब बदल जाता है।आत्मा एक शरीर छोड़कर जाकर गर्भ में प्रवेश करती है।फिर बाहर निकलती है शरीर के साथ।तो वो मां कहने लगती है।आत्मा जानती है हमने मेल का रूप या फीमेल का रूप धारण किया है।आत्मा ही आर्गन्स द्वारा कहती है (मैं) गुजराती हूँ, क्रिश्चियन हूँ।अब तुम्हारी आत्मा कहेगी हम शूद्र थे।अब ब्राह्मण बने हैं।ब्राह्मण से फिर देवता बनते हैं।फिर क्षत्रिय बनेंगे।फिर वैश्य बनेंगे।आत्मा ही बनती है।अब तुम आत्मअभिमानी बने हो।यह भी तुम जानते हो अभी हम संगमयुग पर है।बाकी सारी दुनियां कलियुग में है।हम भी पहले कलियुग में थे।अब संगमयुग में आये हैं।ब्रह्मा की संतान ब्राह्मण ब्राह्मणियां हैं।यह भी जानते हो ब्राह्मण तो बहुत हैं ;परंतु वो है सब कुखवंशावली।तुम हो मुखवंशावली।तुम खास कहलाती हो ब्रह्माकुमार कुमारियां।तो तुम सच्चे2 ब्रह्मा की संतान ब्राह्मण ब्राह्मणियां ठहरे।वो ब्राह्मण लोग अपने जिस्मानी बाप का नाम लेंगे।यह प्वाइंट बहुत ही सूक्ष्म समझने की है।जो सर्विस पर नहीं हैं उनकी बुद्धि में नहीं बैठेगा।जो सर्विस पर रहते हैं उनको ही धारणा होगी।धारण कर और फिर धारण कराना है।बाप भी सर्विस पर ही तत्पर हैं ना।तुम बच्चे आत्मायें भी इस शरीर द्वारा सर्विस पर तत्पर हो।बाप इन शरीरों को नहीं देखते हैं।शरीर में मोह नहीं हो सकता।बाप तो आये ही हैं इन शरीरों का विनाश कराय और आत्माओं को वापस ले जाने।तो बाप का आत्माओं पर प्यार है।आत्माभिमानी बनाते हैं।और तो सभी मनुष्य हैं देहअभिमानी।उन सबका शरीरों पर प्यार है।जानते हैं आत्मा ही नालेज धारण करती है।बाप घड़ी2 कहते हैं अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो।तुम ब्राह्मणों और उन ब्राह्मणों में कितना फर्क है।तुम हो संगमयुग के मुखवंशावली ब्राह्मण।यह यज्ञ है ना।शिवबाबा है ज्ञान का सागर।तो इसको कहेंगे शिव ज्ञान यज्ञ।वो यज्ञ मनुष्य रचते हैं।मण्डप बना कर फिर उसमें यज्ञ रचते हैं।वो हो गया हद का यज्ञ।यह बेहद का यज्ञ बाप ने रचा है।इस यज्ञ में क्या आहुति पड़नी है?सारी पुरानी दुनियां की।यह सारी दुनियां (भस्मीभूत) होनी है।कितनी बड़ी आहुति है।तुम्हारे यह शरीर भी भ्रष्टाचार के पैदा हुये हैं ना।यह सब खतम हो जावेंगे।भ्रष्टाचारी शरीर सतयुग में नहीं होंगे।तुम अब श्रेष्ठाचारी बन रहे हो।भ्रष्टाचार को पाप कहा जाता हे।पाप देहअभिमान से होता है।अब तुम बच्चों को कोई भी पाप नहीं करना है।बाप का बन कर अगर कोई पाप करते हैं तो फिर सोना दण्ड पड़ जावेगा।पद भी बहुत कम हो जावेगा।पाप करने से दिल अंदर खाती है।तो लिखते हैं बाबा आज हमने पाप किया।बच्चे बहुत सताते थे ,उनको मारा।बाबा आज स्त्री को थप्पड़ मारा।कोई2 स्त्रियां लिखती हैं बाबा हमने यह पाप किया, पति को उल्टा–सुल्टा बोल दिया।कोई2 स्त्री बड़ी तीखी होती हैं।पुरुष बुद्धू होते हैं।कहीं फिर स्त्री बुद्धू ,पुरुष तीखे होते हैं।तो बाप कहते हैं कोई भी पाप होता है तो फट से बताओ।ऐसे भी बच्चे हैं इस समय तक जिनको यह भी पता नहीं है कि पाप और पुण्य किसको कहा जाता है।पाप ही करते रहते हैं।झूठ बोलना भी पाप है ना।हां, कल्याण अर्थ झूठ बोलना नहीं होता।बच्चियां छिपकर आती हैं।बहाना हास्पिटल का कर सैन्टर पर आ जाती हैं।वो हुआ कल्याण के लिए झूठ बोलना।यह तो समझ की बात है ना।बहुत हैं जो पाप करते रहते हैं।यहां तो झूठ बोलने की दरकार ही नहीं है।संगदोष में झूठ बहुत बोलते हैं।बाप समझाते हैं तुम हो ब्राह्मण।शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा भी है।तो बच्चे भी हों।पोत्रे और पोत्रियां भी हों।अभी तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है वर्सा पाने का।पुरुषार्थ आत्मा ही करती है।आत्मा बाप को याद करती है।तुमसे कोई भी पूछे बोलो हम प्रजा

पिता ब्रह्माकुमार कुमारियां बिल्कुल ही अलग हैं।शिवबाबा ब्रह्मा में प्रवेश कर ब्रह्मा मुखवंशावली रचते हैं।ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कराते हैं।ब्राह्मण बनने सिवाय हम देवता कैसे बनेंगे।पहले2 हैं ब्राह्मण।इसलिए बाबा विराट रूप का चित्र भी बनाय रहे हैं।तमोप्रधान मनुष्य इतने तो बुद्धू बन गये हैं।कुछ भी समझते नहीं हैं।भक्तिमार्ग की जंजीरों में फंसे हुये हैं।जो भी गुरू हैं सब हैं भक्ति दुर्गति मार्ग के।सद्गति मार्ग का तो एक ही सतगुरू है।बाकी सब अनेक गुरू हैं दुर्गति वाले।कितने ढेर गुरू हैं।सतयुग में गुरू की दरकार नहीं ;क्योंकि वहां तो सब सद्गति में हैं।गुरू चाहिए जहां दुर्गति हो।यहां मनुष्यों को ज्ञान का जरा भी पता नहीं है।तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं जो सर्विस पर तत्पर रहते हैं।वो हैं सच्चे2 ब्राह्मण। ब्राह्मण भी दो प्रकार के होते हैं।मातेले और सौतेले।मातेले कब विकार में नहीं जावेंगे।बाप को ही सदैव याद करते रहेंगे।मेरा तो एक बाबा दूसरा ना कोई।वो हुये पक्के मातेले ब्राह्मण।यहां तो कई ऐसे हैं जो सौतेले से भी बदतर हैं।अपनी उन्नति के बदले और ही दुर्गति कर लेते हैं।और ही गिर पड़ते हैं।कुछ भी समझ नहीं है।ब्राह्मणियां जो सैन्टर्स पर हैं उनमें भी सौतेली और मातेली हैं ;क्योंकि चलन भी ऐसी चाहिए ना।मातेले बन कर राजाई पद पावें।अगर राजाई नही पा सकते हैं तो उनको क्या कहेंगे?सौतेले।प्रजा में तो कोई2 बहुत धनवान बनते हैं और वो जाकर थर्ड क्लास दास–दासियां बनेंगे।करके पिछाड़ी में राजा बनेंगे।फर्क तो बहुत हुआ ना।थर्ड ग्रेड दास–दासियां बनने से तो प्रजा में साहुकार बनना अच्छा है ना।बाबा के पास कोई आकर पूछे तो बाबा झट बतावें तुम यह जन्म लेंगे इस हालत में।वो समय भी जल्दी आवेगा जो तुमको मालूम पड़ता रहेगा कि हम फलाने बनेंगे।स्कूल में कोई पास होते हैं, कोई फेल होते हैं।कोई किसी सब्जेक्ट में फेल हो पड़ते हैं तो दुःख होता है ना।मित्र–सम्बंधी आदि कहेंगे तुम ठीक नहीं पढ़े तो यह हाल हुआ।यहां तो है कल्प कल्पांतर की बात।समझा जावेगा इनकी कल्प कल्पांतर यही हालत होगी।दिन प्रतिदिन मालूम होता जाता है कौन2 कितने मार्क्स से पास होंगे।सब पता पड़ेगा।यह है बेहद की गॉडली यूनिवर्सिटी।गीता का भगवान बैठ राजयोग सिखाते हें।कितनी बड़ी वर्ल्ड यूनिवर्सिटी है।सारी दुनियां के मनुष्य पावन बनते हैं।यह मनमनाभव का मंत्र तो सभी आत्माओं के लिए है।सभी आत्माओं को बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।इसको कहा जाता है याद वा योग।बाप कहते हैं कई बच्चे पढ़ाई में भले कुछ अच्छे जाते हैं ;परंतु योग में कम रहने कारण विकर्म बहुत होते रहते हैं।देही अभिमानी बन बाप को याद नहीं करते हैं तब विकर्म होते हैं।फिर मित्र–सम्बंधी, दोस्त आदि ही याद पड़ते रहेंगे।शिवबाबा को याद नहीं करते हैं।ऐसे ढेर हैं सखियों का सखियों में प्यार हो जाता।शिवबाबा से प्यार उड़ जाता है।बाप तो सब बातें समझाते हैं।तुम्हारी डबल मिशन है।शूद्र को पहले ब्राह्मण ,फिर ब्राह्मण को देवता बनाने पड़े।कितनी मेहनत है।बहुत हैं जो श्रीमत पर चलते नहीं हैं।अपनी मत या सखियों की मत पर, भाइयों की मत पर चलते हैं।तो फिर क्या हालत हो जाती है।बाप कहते हैं हम तो श्रीमत देते हैं।मैं ब्राह्मण धर्म और सूर्यवंशी, चंद्रवंशी धर्म स्थापन करता हूँ।जो अच्छी रीति नहीं पढ़ते हैं वो चंद्रवंशी में चले जाते हैं।इस रुहानी पढ़ाई में तो बहुत ध्यान देना चाहिए।इसमें सैक्रिफिकेशन भी बहुत चाहिए।तन ,मन,धन सब चेंज करना होता है।आत्मा में मन, बुद्धि है।आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है।तो फिर तन भी नया मिलता है।शिवबाबा कुछ लेते नहीं हैं।वो तो हैं दाता।उनका हाथ सदैव (भरतु) ऐसे रहता है।राजा को कब भी पैसे दो तो वो हाथ में नहीं लेंगे।उनका हाथ कब ऐसे नहीं होता।बाबा तो अनुभवी है ना।5गिन्नी जाये (नजराना)रखते हैं।वो फिर अपने सेक्रेटरी तरफ इशारा करेंगे या तो उनको कहेंगे वापस कर दो।फिर हमको अपने पास लेना पड़े। (यह) कायदा है।कोई लेते हैं ,कोई नहीं लेते हैं।दौरे पर जब निकलते हैं तो लाखों नजराना उनको मिलता है।कोई से कुछ भी लेते नहीं हैं।कोई से तो लाखों रुपया लेते हैं।उनके आगे बहुत नजराना रखते हैं ;क्योंकि राजा तो उनके लिए सब कुछ है ना।सतयुग में ऐसे नहीं

होता।बाबा को तो सब अनुभव है ना।रथ तो जरूर अनुभवी चाहिए ना।रथ को कितना श्रंगारते हैं।मुसलमान लोग घोड़े को कितना श्रंगारते हैं।इनकी वो रस्म है।यह भी रथ है ना।राजस्व अश्वमेध.....कहा जाता है।अश्व घोड़े को कहते हैं।इस घोड़े को स्वाहा करना होता है।वो लोग फिर एक दक्ष प्रजा(पति)का यज्ञ दिखाते हैं।उनकी भी एक बड़ी कहानी है।अब प्रजापिता तो एक ही ब्रह्मा है।उन्होंने फिर दक्ष प्रजापिता दूसरा बना दिया है।तो अब पहले2 तो यह निश्चय करो कि हम ब्राह्मण सो फिर देवता बनने हैं।दैवी गुण धारण करने पड़े।एम ऑब्जेक्ट तो सामने है।बाप कहते हैं तुमको ऐसा (ल.ना.) बनना है।कल्प पहले जो बने थे वो ही बनेंगे।बाप को याद करने बिना तो विकर्म विनाश नहीं होंगे।प्रजा बनने लिए दान भी करना है।यह भी तो दान करते हैं ना।ऐसे तो नहीं कि यह ज्ञान नदी नहीं है।ब्रह्मपुत्रा नदी तो सबसे बड़ी नदी है।सिंध ,सरस्वती छोटी है।यह तो बड़ी है ना ;परंतु तुम बच्चों को हमेशा समझना चाहिए कि शिवबाबा सुनाते हैं।तो शिव ही याद पड़ेंगे।ब्रह्मा को भूल जाओ।अपना नाम छुपा देते हैं।अगर यह कहेंगे हमने मुरली चलाई तो मानेंगे ना।बच्चे के कल्याण लिए कहते हैं हमेशा समझो शिवबाबा पढ़ाते हैं।नई2 प्वाइंट्स सुनाते हैं ना।बच्चे भी सुनाते हैं विचार–सागर–मंथन करके।तो बच्चों को कभी छिपाना नहीं चाहिए।देखते हो ब्राह्मणी में देहअभिमान है तो रिपोर्ट्स करनी चाहिए।झट लिखना चाहिए नहीं तो सुधरेगी कैसे?पक्की हो जावेगी।फौरन लिखना चाहिए फलानी ऐसी है।तुम ब्राह्मण अपने लिए सूर्य, चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन कर रहे हो ना।वो ब्राह्मण कहां, तुम ब्राह्मण कहां।तुम तो प्रसिद्ध हो ब्रह्माकुमार कुमारियां।अभी तुम एडाप्टेड हुये हो।इनको भूल उनको याद करना है।हम तो शिवबाबा के पोत्रे पौत्रियां हैं।ब्रह्मा की संतान हैं।ग्रहस्थ व्यवहार में रहते बाप की याद में रहना है।वर्सा शिवबाबा से मिलता है।सदैव यह चिंतन चाहिए।तब तुम अच्छा पद पा सकते हो।मनुष्य तो बिल्कुल क्लाइंड हैं।कहते हैं ब्रह्माकुमारियां क्यों कहलाते हो?अरे ,प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान बने थे ना।प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना तो जरूर ब्राह्मण ब्राह्मणियां रचेंगे ना।ब्रह्मा द्वारा तुमको एडाप्ट किया है।कुखवंशावली तो हो नहीं सकते।मनुष्य यह भी समझते नहीं हैं इतने ब्रह्मा कुमार कुमारियां तो जरूर बाप भी तो होगा ना।अरे, प्रजापिता ब्रह्मा की तो तुम भी सन्तान हो ना।प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं।किसकी?दैवी मनुष्य सृष्टि की।मनुष्य तो मनुष्य ही है ;परंतु बाप कहत हैं मैं आकर मनुष्यों को देवता बनाता हूँ।शूद्र से ब्राह्मण धर्म में ले आता हूँ।ब्राह्मण सो फिर देवता बनते हैं।फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है।तुम भी भूल जाते हो।कोई भी अंदर आते हैं बोलो देखो प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां लिखा हुआ है।प्रजापिता तो बाप ठहरा।अंधश्रद्धा में बच्चे बच्चियां कैसे बनेंगे?ढेर ब्रह्मा कुमार कुमारियां हैं।तुम्हारी संस्था ही अलग है ब्रह्माकुमार कुमारियां।सेमीनार में भी ब्राह्मण ब्राह्मणियां ही आते हैं।शूद्र आ नहीं सकते हैं।हंस मण्डली में बगुले आ जाये तो समझेंगे भी क्या?उनको तो भगा देना चाहिए।बोलो यह हंस मण्डली है।वो है आसुरी सम्प्रदाय।यह है दैवी सम्प्रदाय।रात–दिन का फर्क है।बच्चों को यह भी समझाते हैं कब किसी को देख मत दो।थोड़ी बात में बिगड़ो मत।बहुत मीठा बनो।बाबा कोई जास्ती मेहनत थोड़े ही देते हैं।बच्चों को नालेज धारण करनी है।कोई भी आये बोलो आप कहां आये हैं?यहां सब ब्रह्मा कुमार कुमारियां हैं।ब्रह्मा का नाम कभी सुना है?परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि को रचते हैं।मनुष्य तो है फिर क्या करते हैं?मनुष्यों को देवता बनाते हैं ;क्योंकि मनुष्य पतित हैं।देवतायें हैं पावन।पतित मनुष्यों को पावन देवता बनाते हैं।कैसे बनाते हैं?इसकी भी मशीनरी है।यह है रुहानी नेचर क्योर।आत्मा क्योर हो जाने से शरीर भी क्योर हो जाता है।प्योर आत्मायें इम्प्योर दुनियां में रह नहीं सकती हैं।एक ही घर में स्त्री ब्राह्मण बनती है तो पति शूद्र होता है।बच्ची ब्राह्मणी बाप शूद्र होता है।घर में भी युक्ति से रहना है।ओम।